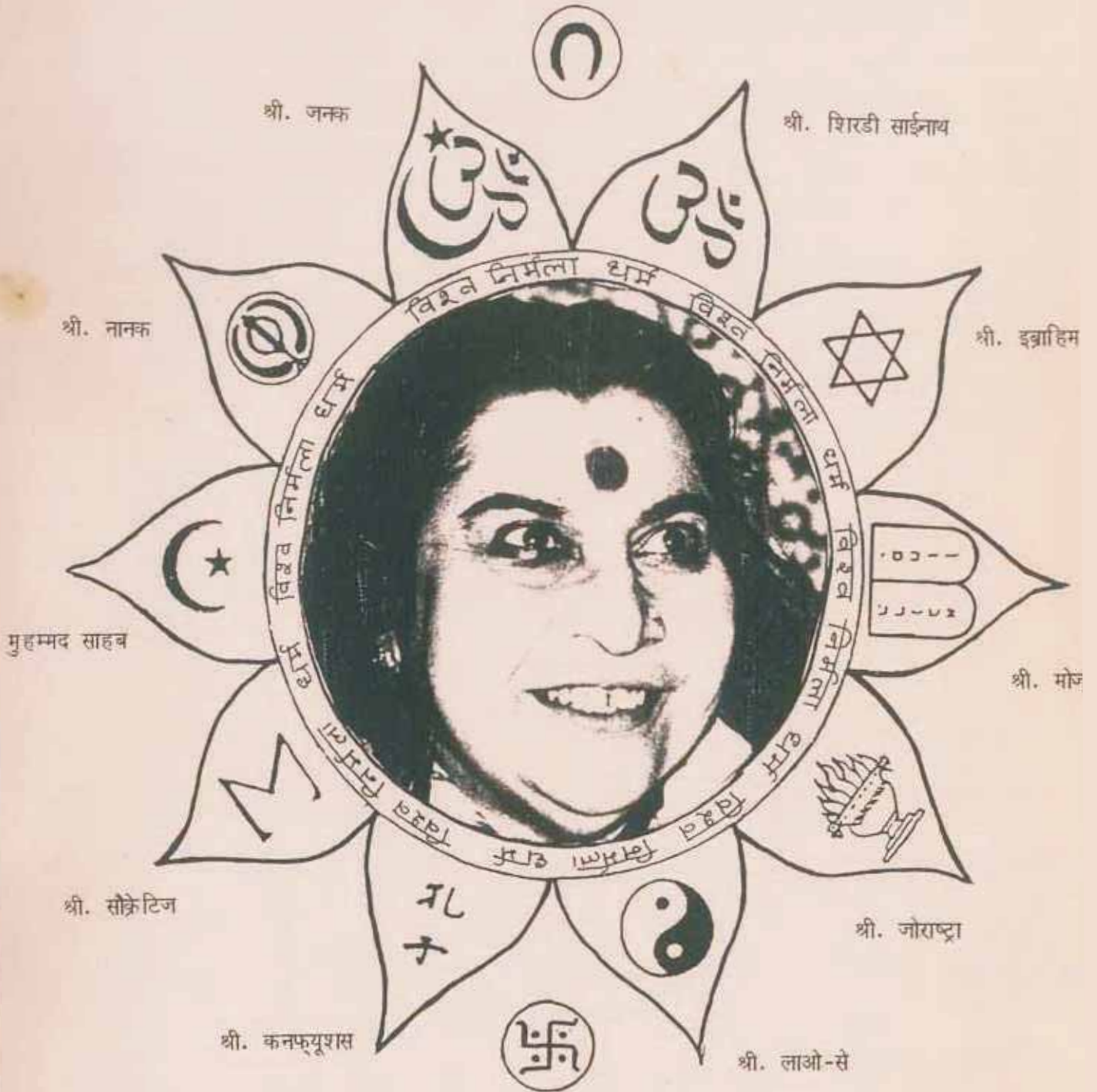


चैतन्य लहरी

1990

खंड 2 अंक 9 व 10

हिन्दी आवृत्ति



गुरु को पूजते समय आप अपने अन्तर-निहित गुरु की भी पूजा करते हैं। अतः गुरु की पूजा करते समय आपके अन्दर के स्वामी की भी पूजा हो जाती है। आप इसका आदर करते हैं, स्तुति करते हैं, जागृत करते हैं, तथा प्रकट करते हैं।

श्री माता जी, (गुरु पूजा)

गुरु पूजा

श्रीवगर्नान - प्रवैस - 8-7-1990

श्रीमाता जी का माषण

सहज योग में गुरु पूजा का महत्व अत्यंत भिन्न प्रकार का है। गुरु को पूजते समय आप अपने अन्दर-निहित गुरु की भी पूजा करते हैं। ऐसा आप इसलिए कर पाते हैं क्योंकि आपके अन्दर का गुरु जागृत हो चुका होता है। अतः गुरु की पूजा करते समय आपके अन्दर के स्वामी की भी पूजा हो जाती है। आप इसका आदर करते हैं, स्तुति करते हैं, जागृत करते हैं, तथा प्रकट करते हैं।

गुरु की सर्वोत्तम विशेषता यह है कि वह आपका सद्भावाकार परमात्मा से करवाता है अर्थात् आपकी कुंडलीनी को उठाकर वह आपका सम्बन्ध सर्वव्यापक शक्ति से स्थापित करता है क्योंकि आपकी गुरु सद्भावा आदि-शक्ति है। अतः आप जिज्ञासु का सद्भावाकार आदि शक्ति से करवाते हैं। एक और श्रेष्ठता भी आपके प्राप्त है - सद्भावाकार देते हुए आप जिज्ञासु को परम-चेतन्य से एकाकार का अनुभव तो देते ही हैं आप उसे परम-चेतन्य की श्रोत उस देवी शक्ति से मिलवा भी सकते हैं।

सहजयोगी होने के कारण क्योंकि आपके अन्दर गुरु है इसलिए आपका उत्तरदायित्व भी बहुत बड़ा है। अपने मंत्रों में हम कहते हैं "श्रीमाता जी, मैं स्वयं का गुरु हूँ" परन्तु इस "मैं" और "स्वयं का गुरु" के मध्य में हमारी उपलब्धि क्या है? मैं कहीं हूँ? मैं स्वयं का मार्गदर्शन कर सकता हूँ? क्या मेरा चित्त इतना आत्म-प्रकाशित है कि मैं पहले अपना और फिर दूसरों का मार्ग दर्शन कर सकूँ? अन्तर्दर्शन अर्थात् स्वयं को देखना गुरु तत्व में अत्यन्त महत्वपूर्ण है। क्या मैं स्वयं का गुरु बन गया हूँ?

एक स्त्री, एक मां आपकी गुरु है। अतः स्त्रियों में गुरु की विशेषताओं का विकास तथा अभिव्यक्ति होना अत्यन्त आवश्यक है। परन्तु स्त्रियां अभी भी केवल मातायें, पत्नियां तथा सहजयोगिनियां मात्र ही हैं। वे ये नहीं समझती कि वे गुरु भी हैं। आपकी मां स्त्री है। और एक गुरु भी। अतः आपके अन्दर भी इतनी विशेषताएँ होनी चाहिए कि लोग कहें, इस स्त्री को देखो, यह कितनी अच्छी गुरु है"। अगुआओं से मुझे पता चलता है कि स्त्रियां बहुत पीछे हैं और उनमें से बहुत कम को ही वास्तविक सहजयोगिनी कहा जा सकता है। स्त्री सुलभ विशेषताओं को ईसाई धर्म ने कभी पाँव नहीं समझा। इस आत्मविश्वास की कमी स्त्रियों में है जिसके कारण वह यह नहीं समझ पाती कि धर्म अन्दर से स्थापित हो सकता है। यह बाह्य वस्तु नहीं है।

समाज में, परिवार में, तथा पारस्परिक सम्बन्धों में धर्म की स्थापना करना गुरु का कार्य है। सभी गुरुओं ने केवल धर्म स्थापना ही की। परन्तु ऐसा करने से पहले हमें स्वयं को देखना है कि हमारे अन्दर धर्म है या नहीं? एक धार्मिक व्यक्ति की प्रथम विशेषता यह है कि वह दूसरों को सुनता है और बात को मानता है। पश्चिमी देशों की स्त्रियों की समस्या यह है कि वे दूसरों को शक्ति से सुनना और

उनकी बात को मानना भूल चुकी हैं। यही कारण है कि उनके बच्चे उनकी आज्ञा नहीं मानते। यदि आप आज्ञाकारी नहीं है तो कोई भी आपकी आज्ञा को नहीं मानेगा। अतः पहले आप आज्ञा-पालन सीखिये। कबीर जैसा महान व्यक्तित्व, जिसकी जाति का कोई पता न था और न ही जो किसी महान व्यक्तित्व के पास स्वयं जा सकता था, अपनी नम्रता के कारण रामदास जी का शिष्य बन गया। लोग आज कबीर को उनके गुरु से भी अधिक जानते हैं। नम्रता मौलिक गुण है। केवल नम्रता द्वारा ही आप आर्शीवाद तथा अपने गुरु के गुण भी प्राप्त कर सकते हैं।

स्वयं मेरे विषय के रूप में एक गुरु को विकसित होना है। सर्वप्रथम आपका जीवन पूर्णतः स्वच्छ होना चाहिए। स्वच्छता सहजयोग का सार है। सबको पता होना चाहिए कि आप क्या कर रहे हैं, कहाँ जा रहे हैं, आप किस तरह रहते हैं, और किस तरह से बर्ताव करते हैं। वो लोग जो गुरु हैं, जिन्हें हम नेता भी कहते हैं, वे प्रायः बहुत ही बतंगण लोग हैं। सदा अपने शरीर के विषय में सोचते हैं। उन्हें सदा यह शिकायत होती है कि उनकी देखभाल किसी ने नहीं की। जैसे वे अत्याचार भावना ग्रस्त हों। कभी वह शिकायत करेंगे कि उन्होंने एक दिन खाना ही नहीं खाया। नहीं खाया तो कोई बात नहीं। भूख के विचार से ऊपर उठने के लिये आवश्यक है कि एक गुरु तीन-चार दिन तक स्वयं को भूखा रखें। गुरु को कोई भूख नहीं होती क्योंकि भूख का सम्बन्ध पेट से है और लहरियाँ इतनी अधिक हैं कि आपको कुछ भी खाने की इच्छा नहीं होती। यदि अगुआ लोग भी खाने के विचार से ग्रसित होंगे तो सहजयोग में वे पर्यटकों की तरह से होंगे। यह गुरु तत्व की अभिव्यक्ति नहीं है। आपने अपनी गुरु को वास्तविकता में देखा है। मैं नहीं जानती मैं क्या खाती हूँ, वे मुझे क्या देते हैं, मेरी इच्छा क्या है। वे जो ठीक समझते हैं मुझे देते रहते हैं। कोई रूचि नहीं होनी चाहिए। रूचियों पर चिन्तन को व्यर्थ नहीं करना चाहिए। आपकी हर रूचि का आधार लहरियाँ होनी चाहिए, भौतिक वस्तु नहीं। किसी विशेष प्रकार के खाने पर आपका रुझान नहीं होना चाहिए। स्वादु खाने की लत भी एक व्यसन है। जेन ने चाय की क्रिया शुरू की, इस क्रिया में वे बड़ी कड़वी चाय पीने को देते। यह एक महान रस्म है। बिना किसी विचार के वे आपके रूप की ओर देखने को कहते हैं और रूप के माध्यम से निर्वाचन समाधि पाने का प्रयत्न करते हैं। एक बार जब आप ये चाय पीते हैं तो, आपका स्वाद बिगड़ जाता है। इसे ठीक करने के लिए वे कुछ मीठी वस्तु देते हैं जो कि इतनी अधिक मीठी होती है कि कड़वी लगती है। यह सब जिह्वा को जीतने के लिए किया जाता है। यह जिह्वा को इतने झटके देती है कि इसके पश्चात् आप हर तरह का खाना खा सकते हैं। यही कारण है कि जापानी हर चीज खा पाते हैं।

खाने के विषय में भारतीय सबसे अधिक बिगड़े हुए लोग हैं क्योंकि उनकी स्त्रियों ने उन्हें अच्छे व्यंजन खिला कर बिगड़ रखा है। जिह्वा का स्वाद उनके लिए एक बहुत बड़ा बंधन है। स्वाद से मुक्ति पाने के लिए गांधी जी लोगों को उबले हुए खानों पर सरसों का तेल डाल कर दिया करते थे। गन्ध संवेदना से छुटकारा पाने के लिए गांधी जी लोगों से पालाने साफ करवाया करते थे। लोग होटलों में जाकर पीना घंटा केवल यह निर्णय करने के लिए व्यर्थ कर देते हैं कि क्या खायें। इस प्रकार के विचार त्यागना सहजयोगियों के लिए अत्यंत आवश्यक है। "आप क्या खायेंगे" यह प्रश्न कोई न पूछे, मुझसे भी नहीं। क्योंकि मुझे इसके विषय में सोचना पड़ता है। और मैं तो निर्वाचन रहना चाहती हूँ। खाने

से हम कितने लिप्त हैं हमें पता होना चाहिए। यह खाना पेट में जाकर हमारे शारीरिक और गुरु व्यक्त को बिगाड़ता है। यही कारण है कि गुरु तत्व को विकसित करने के लिए लोगों को व्रत करने की सलाह दी जाती थी। व्रत का अभिप्राय है कि खाने या व्रत के विषय में सोचना छोड़कर निर्बिचार हो जाना। परन्तु लोग व्रत में केवल खाने के विषय में ही सोचते रहते हैं। इस प्रकार का कोई अभिप्राय ही नहीं रह जाता क्योंकि मानसिक रूप से आप खाते ही रहते हैं। आप यही सोचने में लगे रहते हैं कि कब व्रत समाप्त हो और कब मैं खाऊँ। हमें अपनी आदतों और बंधनों से छुटकारा पाना चाहिए।

बच्चों को भी इसका प्रशिक्षण ठीक प्रकार से देना चाहिए। उन्हें नमक या चीनी की परवाह नहीं होनी चाहिए। सहजयोगी जो कई दिनों तक भूखे रह सकते हैं उनके लिए कुछ आवश्यक नहीं। खाने का स्वाद या भूख नाम की चीज सहजयोगियों के लिए नहीं है। उनके लिए केवल एक ही भूख है - यह पवित्र होने की भूख, स्वच्छ होने की भूख। हर समय खाने के विषय में सोचते रहना। हमारे मस्तिष्क को अस्वच्छ कर देता है। स्वाद से छुटकारा पाने का प्रयोग आपको करना है। जब तक हम अन्तर्दर्शन नहीं करते और स्वयं पर प्रयोग नहीं करते तब तक हमें बंधनों से छुटकारा नहीं मिलता। यद्यपि कुण्डलिन भरसक प्रयत्न कर रही है फिर भी इतने अधिक बंधनों के होते हुए वह आपको गुरु नहीं बना पाती।

स्त्री सक्षात्कारी गुरु विवाहित थे। उनके बच्चे थे और उन्होंने सामान्य जीवन व्यतीत किया। परन्तु व्यक्तिगत जीवन में वे पूर्णतयः निर्लिप्त थे। पहली निर्लिप्तता खाने से होनी चाहिए। जो भी आपको पसन्द हो वो खाना मत खाइये। यदि आप स्वयं के गुरु है तो अपने शरीर और बंधनों पर काबू पाइये। अपने शरीर का आदर कीजिए और इसे, सब प्रकार का खाना खाने की आदत डालिये। यदि आप इस छेटी से आदत से छुटकारा नहीं पा सकते तो आप सहजयोगी नहीं कहला सकते। संतुष्ट आत्मा गुरु तत्व की एक अभिव्यक्ति है। गुरु सदा आत्म-क्वियोर होता है।

शरीर की दूसरी विशेषता यह है कि यह सुख-सुविधाएँ चाहता है। पश्चिमी सहजयोगी चाहे वह किसी भी जीवन स्तर के रहे हो, बिना किसी सुख सुविधा की मांग किये भारत भ्रमण के समय आत्मानन्द में क्वियोर रहते हैं। वे कभी कुर्सी या बिस्तर की मांग नहीं करते। भारत के सहजयोगियों को उनसे बहुत कुछ सीखना है। आप महसूस करेंगे कि शारीरिक सुखों को कोई महत्व नहीं है। किसी भी तरह से शरीर तो सो ही जायेगा।

तीसरी बात भौतिक दृष्टिकोण तथा भौतिक पदार्थों के लिए चंचल दृष्टि है। सहजयोगियों की दृष्टि बड़ी स्वच्छ होनी चाहिए। कामुकता और लालच अन्य बाधाएँ हैं। सहजयोग में कामुकता तो समाप्त हो जाती है परन्तु लालच में लोग फँस जाते हैं। भारतीय लोगों की यह विशेष समस्या है।

पश्चात्य लोगों का भौतिक पदार्थों की ओर बढ़ा लगाव है। ऋतु के विक्रय मूल्य पर उनका सदा ध्यान होता है। पुरा -ऋतुओं {फेन्टीक} का उन्हें व्यसन है। भारतीय लोगों को तो समझ नहीं आता कि पश्चिमी लोग इन टूटी-फूटी, सड़ी-गली ऋतुओं के दीवाने क्यों हैं। एक भारतीय लेखक ने एक बार लिखा कि बनारस की सड़क पर दो अंग्रेज जा रहे थे और उनके पैरों पर आकर एक पीतल का लोटा गिरा जिससे उन्हें चोट भी लगी। वे बहुत बिगड़े। परन्तु लोटा गिराने वाले भारतीय ने उन्हें बताया कि यह लोटा बहुत

मूल्यवान है क्योंकि महाराज अकबर ने इसका प्रयोग किया था। अंग्रेज इस बात से बहुत प्रभावित हुए और उनसे कहने लगे, कि हम तुम्हें माफ कर देंगे, अगर यह लोटा हमें 1000 रुपये में दे दो। उस भारतीय ने अपनी जान बचाने के लिए उनसे ऐसा कहा था। अतः पुरा- कस्तुओं के लिए पागलपन हमें त्याग देना चाहिए। और पुरा - कस्तुओं के पीछे भागने की जगह हमें प्राचीन कला को बढ़ावा देना चाहिए। किसी भी कस्तु का सम्मान उसके अन्तरिक मूल्य तथा सौन्दर्य के लिए ही होना चाहिए। हमें किसी भी कस्तु को स्वीकार करने के लिए लहरियों से परखना चाहिए क्योंकि हम लहरियों की भाषा ही जानते हैं और हमें उसका प्रयोग करना चाहिए। उसके प्रयोग से हम जान जायेंगे कि हमें क्या करना है।

सहजयोगियों का यह सोचना कि वे बीमार है बहुत ही बुरा है क्योंकि इससे सहजयोग का नाम बदनाम होता है। यदि अब भी आप सोचते है कि आप बीमार हैं, तो आप सहजयोग से बाहर चले जाइये। या तो आप स्वयं को ठीक कर लीजिए नहीं तो आप सहजयोगी नहीं है। फिर भी छोटी-छोटी समस्याओं की परवाह मत कीजिये। उदाहरण के रूप में आदि-शक्ति होते हुए भी मैं बिना चिन्ता किये कई शारीरिक तथा अन्य समस्याओं का सामना करती हूँ। शरीर जैसा है वैसे ही उसे स्वीकार करना है। स्वास्थ्य के विषय में शिकायतें नहीं करनी है। कभी मत सोचें कि आप वृद्ध है या बेकार हैं। अपनी माँ को देखें। मैं ऐसा नहीं सोचती। अतः यदि आपका कोई गुरु है तो उसका बिम्ब आपके अन्दर होना चाहिए। अपनी माँ को देखें, वह कितनी वृद्ध हैं, कितनी अधिक यात्रा करती हैं और कितना अधिक कार्य वह करती हैं।" आप कह सकते है कि वे आदि-शक्ति हैं। परन्तु उनकी थोड़ी सी शक्ति तो आपके अन्दर भी है, इस शक्ति का प्रदर्शन आपकी गतिशीलता से होना चाहिए। यदि आपमें गतिशीलता नहीं है और यदि आप अब भी स्वयं को दुर्बल पाते हैं तो आप सहजयोगी नहीं हैं। जो भी आप मांगते है आपको मिल जाता है। जवानी की मूर्खता राहत परन्तु आयु की गम्भीरता के साथ आप दिन-प्रतिदिन जवान होते जा रहे हैं।

जन्म से साक्षात्कारी बच्चे बहुत महान होते हैं वे कोई भी गौरवहीन बात नहीं करते और न ही व्यर्थ बोलते है। केवल साडियर्न पहनने और बिन्दी लगाने मात्र से आप सहजयोगी नहीं बन जाते। आपके अन्दर गम्भीरता कहां है? केवल आवश्यक बातचीत कीजिए। जन्म से साक्षात्कारी आत्मार्थ बहुत कम बोलती हैं। परन्तु जो भी बोलती हैं परन्तु जो भी बोलती हैं बहुत सुन्दर होता है। वे बहुत ही आज्ञाकारी होती है। क्या हम भी उनके गुरुत्व की तरह कार्यरत है? या हमारी गतिविधियाँ उत्थान विरोधी हैं? सहज में आकर भी यदि आप अन्तर्दर्शन नहीं करते तो आप स्वयं की गुरु से तुलना करने वाली बात भूल गये हैं। हम सहजयोगी हैं। सहजयोगी की गरिमा को सामने रखते हुए हमें सब कुछ समझना है। एक सहजयोगी को सर्वप्रथम दूसरों के प्रति प्रेम होना चाहिए। यदि आप सदा अपने लिए ही चिन्तित रहते हैं तो आप दूसरों को प्रेम नहीं करते। क्या आप दूसरों के लिए आराम खोजते है? क्या आप दूसरे सहजयोगियों के प्रति करुणामय हैं? क्या आप कठिनाई सहकर भी, उनकी सहायता करते हैं? बहुत से सहजयोगी, सहजयोग से बाहर के लोगों की तरफदारी करके सहजयोगियों का अपमान करते हैं। आप इस नई जाति से सम्बन्धित हैं। सहजयोगी की सहायता करना आपका कर्तव्य है। क्योंकि आपका सिर भी वही है और हाथ भी। उसमें कोई कमी भी हो तो चिन्ता न कीजिए। पहले आप हर प्रकार से सहजयोगी की मदद कीजिए और फिर उसे सुधारने का प्रयत्न।

यह गौरव तथा सूझ-बूझ केवल मौन से आती है। हर वक्त बोलते रहना आपको गहन नहीं होने देगा। स्त्रियों के लिए मौन रहना बहुत अच्छा है। अगुआ लोगों ने मुझे बताया है कि स्त्रियों के साथ यह बहुत बड़ी समस्या है। वे या तो बोलती रहती हैं या अफवाहें फैलाती रहती हैं। परन्तु यदि उन्हें मंच पर आकर बोलने को कहा जाए तो वह कंपने लगेगी। कितने लोग भाषण दे सकते हैं? याद रखो यदि भाषण देने की योग्यता आप में नहीं है तो आप ज्यादा बोलिये भी नहीं। आपकी माँ एक स्त्री हैं और वह भाषण देती है। भाषण देने की यह योग्यता आप में भी होनी चाहिये। आपकी गुरु होने के नाते मैं आपको बताती हूँ कि आपने उत्थान को पाना है। अतः व्यर्थ बोलना बंद कर दीजिये। "मौनम सर्वथा साधनम" शान्त रहिये। यदि कोई व्यक्ति ज्यादा बोल रहा हो तो चुप रहिये। यदि कोई आलोचना कर रहा है तो भी शान्त रहिये। यदि कोई आक्रमण कर रहा है तो भी शान्त रहिये। यह शान्त हर हाल में चुप रहने से ही स्थापित हो सकेगी। चर्च में जाकर लोग इस प्रकार का अनुशासन दिखाते हैं परन्तु वह बनाकटी होता है। जिस जगह पर आप अब हैं? वहाँ इस प्रकार का मौन सूझ-बूझ तथा डर होना चाहिए। गुरु तत्व के विकसित न होने के कारण यह शान्ति हममें नहीं है। जब आपका गुरु तत्व विकसित हो जायेगा तब आपके आचरण में आपकी गम्भीरता छलकं पड़ेगी।

सहजयोग में विवाह का कोई अधिक महत्व नहीं। कुछ लोगों का चित्त बहुत अधिक विवाह पर होने के कारण विवाह सिरदर्द बन जाता है। आप लोग सहजयोग में आये हैं, आप स्न्यासी हैं। आप केवल सहजयोग से विवाहित हैं। कहने मात्र को पति-पत्नि तो है परन्तु यदि आप सहजयोगी नहीं हैं - सब बेकार है। सहजयोग से पहले विवाह एक हास्य मात्र था। हर तीसरे दिन तलाक हो जाता था। सहजयोग में आकर जब आप विवाहित हुए तो अति भावुक लोग बन गये। यहाँ तक के भारत के गाँवों में लोगों ने शिकायत की कि ये कैसे लोग है कि जिनमें लज्जा ही नहीं। विवाहित जीवन में स्न्यासियों का त्याग तथा महानता प्रकट होनी चाहिए। पति-पत्नि के सम्बन्ध गोपनीय हैं। यदि आप जन-साधारण में रोमांस करने लगेंगे तो पूरे सहजयोग को हानि पहुँचायेंगे। पश्चिम में कहते है प्रेम में पड़ना "फल इन लव" तो फिर आप गिरेंगे, उठेंगे नहीं।

पति के साथ मोह और उसकी चिन्ता व्यर्थ है। आपको सही भाव से पति या पत्नी की अवस्था को देखना है। विवाह के फौरन बाद लोग अपने पुराने संस्कारों के कारण मधुमास की व्यवस्था करते हैं, और इसके तुरन्त बाद आकर कहते हैं "माँ यह विवाह नहीं निभेगा"। मन्द-2 चलकर आप कोई निर्णय लीजिये। भारतीयों से आप लज्जा भाव सीखिये। जन साधारण में पति-पत्नि कभी झूठे नहीं बैठते इसे बुरा समझा जाता है। जन साधारण में अपने सम्बन्ध दर्शाने की आवश्यकता ही क्या है? सार्वजनिक स्थानों पर पुरुष, पुरुषों में रहें तथा स्त्रियाँ, स्त्रियों में।

ईर्ष्या भाव तथा सत्ता लोलुपता की भावना के कारण पुरुष नेतागिरी के बारे में चर्चा करते रहते हैं। अपने नेता न बनने की बात सुनकर उन्हें बहुत ठेस पहुँचती है। वे समझते है कि नेतागिरी कोई ठोस उपलब्धि है। यह व्यर्थ की बात है। सहजयोग में नेता नाम की कोई चीज नहीं है। यह केवल एक मजाक है और आपकी माँ संजीदा मजाक करने वाली है। अतः सावधान रहिये। यह एक परीक्षा है। उस स्तर पर मैं आपकी परीक्षा लेती हूँ। तथा मुझे पता लग जाता है कि कब व्यक्ति अहंम के घोड़े पर सवार हो गया है। अतः हमारा मानसिक दृष्टिकोण भिन्न होना चाहिए। तथा हमारी प्रार्थामकताओं में भी परिवर्तन आना चाहिए।

हमारा उत्थान हमारी पहली प्राथमिकता है। उत्थान के लिए यदि आवश्यक हो तो अपने पूरे शरीर को वीडत कीजिये और किसी बंधन में यदि आप बंधे हैं तो उससे छुटकारा पाइयें। स्वयं का अन्तर-दर्शन कीजिये। स्वयं को जानने के लिए ही आत्म साक्षात्कार है। जब आप स्वयं को जान जायेगे तो आप को अपने बंधनों का पता चल जायेगा तथा आप उनसे छुटकारा पा सकेंगे। मन, बुद्धि तथा अहंकार आपके दास होने चाहिए। आपके पास साक्षात्कारी होने के बहुत से प्रमाण है। मेरे सामने बैठकर यदि आप प्रकाश-पुञ्ज बन जाते है तो उस प्रकाश को आगे फैलायें। जब आप यह अनुभव करेंगे कि माँ मेरे विषय में बात कर रही है, मुझे बता रही है, मुझे सुधार रही है, तब आप अपने अन्दर उतर सकेंगे।

सर्क्यापक शक्ति हमारी देखभाल कर रही हैं। यह विश्वास अत्यन्त महत्वपूर्ण है। संगीतकारों को रेल पर मास्को से मिलान आने को कहा गया। हंगरी का वीजा उनके पास न होने के कारण, हंगरी की सीमा पर उन्हें रेल से उतार दिया गया। ये प्लेटफार्म पर बैठे थे। वीजा न होने के कारण उनकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या करे। वहाँ की भाषा भी वे न जानते थे और रुपये भी उनके पास बहुत कम थे। इस अवस्था में भी वे हँस रहे थे और आनन्द ले रहे थे। कितने समर्पित थे वे सब कि अपनी समस्या का आभास तक उन्हें न था। तभी कसटम् के लोगों ने उनसे पूछताछ शुरू कर दी। बातचीत के मध्य ही संगीतकारों ने कसटम् अधिकारियों को साक्षात्कार दे दिया। क्या आप प्रेम की शक्ति पर विश्वास कर सकते हैं। कसटम् अधिकारियों ने सीमा पार ले जाने के लिए अपनी गाड़िया उन्हें दे दी। तभी एक खाली बस आ गई जिसमें दो युगोसलीवियन थे। ड्राइवर ने उनकी समस्या के विषय में पूछा और उसे भी साक्षात्कार प्राप्त हो गया। तब वह ड्राइवर उन्हें मिलान आश्रम तक छोड़ गया। अतः आपको अपने में तथा परम-शक्ति में, जो कि आपको चारों ओर से घेरे हुए है, पूरा विश्वास होना चाहिए। एक बार जब यह विश्वास आपमें आ जायेगा तो आप यह अनुभव करेंगे कि यह शक्ति आप पर दयालु है और आपकी कितनी सहायक। परन्तु यदि आप इसका अपमान करेंगे तो यह बहुत ही हानिकारक भी हो सकती है। अतः कभी गुरू निन्दा मत सुनो। यदि कोई आपके गुरू की निन्दा करता है तो कानों पर हाथ रखकर सुनने से इन्कार कर दो। भौतिकतावादी लोग यदि धनार्जन की बातें करें तो आप उन्हें बताये कि यदि माँ को धन कमाना होता तो वह कैंसर के रोगियों तथा अन्य रोगियों को ठीक करके कमा लेती। वे तो एक पैसा भी नहीं लेती। उनका बहुत बड़ा घर तो उनके लिए न होकर सहजयोगियों के रहने के लिए है। सहजयोगियों में अभी उस आत्मविश्वास की कमी है। जिससे की वह आवश्यकता पड़ने पर दावे के साथ अपनी बात कह सके। जब भी कोई आपके गुरू वे विरुद्ध कोई बात कहें तो आपको प्रभावपूर्ण ढंग से उसका विरोध करना है।

आध्यात्मिकता के प्रति अपनी संवेदनता को हमें देखना है। कुछ सहजयोगी नकारी व्यक्तियों का साथ देते हैं। आप का कम्प्यूटर ही यदि खराब है तो उसका क्या लाभ। एक अच्छा सहजयोगी जिसमें लहरियाँ हैं किसी भी साधारण, निरहंकारी गरीब तथा अशिक्षित व्यक्ति की लहरियों पर देख कर निर्णय लेता है। क्या आप किसी व्यक्ति को उसकी मीठी बातों और उसके पॉइंट्य से देखते हैं? आप उसे लहरियों से देखें। जो भी व्यक्ति दूसरों को उनकी लहरियों से परखता है वह सहजयोगी है। अगुआ लोगों को भी मैंने बहुत बार नकारी लोगों का पक्ष लेते हुए पाया है। वे मुझे बतायेंगे कि अमुक व्यक्ति बहुत अच्छा है। क्योंकि उसने इतना धन सहज को दिया है। धन दिया है तो क्या?

बहुत से गुरु स्वयं की पकड़ में होते हैं उनकी उच्च आकांक्षाओं के कारण उनका अहंम व जाती है। वे बहुत ही उग्र स्वभाव के हो जाते हैं। एक गुरु को सर्वप्रथम बहुत ही मधुर, कोम तथा अच्छा होना है। उसे कभी कुछ नहीं मांगना चाहिए। सम्मान जीता जाता है मांगा नहीं जाता एक बार जब आपका उत्थान हो जाता है आप बुद्धिमान हो जाते हैं, अपनी चेतना तथा आत्मा आ जाते हैं तो सब कुछ ठीक हो जाता है। आपको कोई चीज मांगनी नहीं पड़ती किसी बात की शिकायत आप नहीं करते, आदि शक्ति के सभी गुण आपके लिए कार्य करते हैं तथा आपकी देखभाल भी करते हैं परन्तु यदि आप अधकचरे हैं तो ये गुण आपके साथ शरारत करते हैं। वे आपको विचलित करते हैं आप इधर-उधर दौड़ते हैं। गण मजाकिये भी है और आपके साथ मजाक भी करते हैं और आपके लिए समस्याएँ भी सझी करते हैं। हमें यह समझना है कि हम यहाँ विश्व की मुक्ति के लिये हैं। मुझे आशा है कि आप अपना उत्तरदायित्व समझते हैं। जान लीजिये कि एक गुरु के रूप में तुम्हें कैसा होना है, किस तरह कार्य करना है और इसे किस तरह सफल बनाना है।

गुरु बनने के लिए आपमें परिपक्वता होनी चाहिए। मेरे साथ बड़ी सावधानी से व्यवहार कीजिये बहुत साधारण होते हुए भी मैं महामाया हूँ। मेरे साथ आप धृष्टता नहीं कर सकते। मेरे साथ धृष्टता करने का तात्पर्य यह है कि आप शिष्य नहीं हैं। एक शिष्य को गुरु से अन्तर रखना पड़ता है। जो जी चाहें मेरे कमरे में आकर घंटों बैठकर तुम मुझसे गपशप नहीं कर सकते। उसका अधिकार तुम नहीं है। मेरे बुलाने पर ही तुम्हें आना चाहिए। गुरु पर अपनी इच्छा मत लादिये, ऐसा नहीं होना चाहिए।

हर चीज सुस्पष्ट होनी चाहिए। एक दूसरे को भली-भाँति से जानना चाहिए। एक दूसरे के प्रार्थना गुरुओं को नहीं सुहाती। एक दूसरे की संगति का पूरा आनन्द लीजिये और दूसरे लोगों की अपेक्षा आप एक दूसरे की अधिक सराहना कीजिए। तब आप गुरुत्व तक पहुँच सकेंगे। गुरु कभी एक दूसरे से नहीं लड़े। उन्होंने एक दूसरे की सहायता की। वास्तव में एक ही तत्व {गुरु तत्व} का जन्म बार बार हुआ। केवल राक्षसी प्रवृत्ति के लोग ही साक्षात्कारी लोगों तथा अवतारों के विरुद्ध बोलते हैं।

हम सब एक विमान पर सवार हैं। और हमें एक बहुत ही सुन्दर क्षेत्र पर उतरना है। परन्तु इससे पहले हमें पूर्ण नम्रता तथा समर्पण अपने अन्दर विकसित करने होंगे। जब तक यह नम्रता और समर्पण आपके हृदय में नहीं होंगे तब तक आपका गुरु तत्व जागृत नहीं हो सकता। शिष्य बनव ही आप गुरु बनेंगे। मुझसे प्रेम करने से तथा मेरा सम्मान करने से यह नम्रता बड़ी सुगमता से आती है।

परमात्मा आपको धन्य करें।

उत्तरी अमेरिका राष्ट्रीय पूजा

सारंश

सैन्डियागो, मई - 28, 1990

ब्रह्मांड के नक्शे में अमेरिका विशुद्धी चक्र है। अतः अध्यात्मिकता के क्षेत्र में यह देश बहुत महत्वपूर्ण है। ईसा चक्र विशुद्धी चक्र का महत्वपूर्ण सहायक चक्र है। जर्मनी में ईसा चक्र पूजा हुई जिसके अन्तर्गत जर्मन लोगों का विवेक विकसित हुआ और उन्हें अपनी पहली की हुई गलांतियों का अहसास हुआ।

इस में जाकर साक्षात्कार देने वाले वे पहले लोग थे और बरालिन की दीवार को तोड़कर उन्होंने वहीं जर्मनी के लोगों का स्वागत किया।

कॉन्ग्रेस, डर और बलिदान के कारण पूर्वी खंड के लोगों का विवेक विकसित हो गया है। परन्तु अमेरिकन लोगों के पास "देवी विवेक" नहीं है। कैभव ने उन्हें इतना बिगाड़ दिया है कि वे धर्म-धर्म में भेद नहीं कर सकते। यह जानकर आश्चर्य होता है कि उस आतंक और भय के वातावरण में तो वहाँ यह ज्ञान उन देशों से कहीं अधिक बढ़ पाया जिनमें कैभव तथा जीवन की सुख-सुविधा कहीं अधिक है। श्री कृष्ण ने पांडवों की सहायता इसीलिए की क्योंकि वे धार्मिक थे, परन्तु अमेरिका सदा दूसरे देशों से तानाशाही सरकार जैसी अनुचित चीजों की सहायता करता है। लोगों में देवी विवेक की कमी को जानकर ही कुगुरु इस देश में आ बसे।

अब्राहम लिंकन का प्रजातन्त्र जो कि "लोगों के लिए" होता है अब लुप्त हो गया है। सरकार तथा जनता अब केवल अपने स्वार्थ को देखते हैं। बदमाश तथा धोखेबाज चुनावों में सफल हुए तथा यह प्रवृत्ति पूरे विश्व में फैल गई। हर देश के नेता धनलोलुप बन गये। केवल साक्षात्कार के बाद ही जातंत्र सफल हो सकता है। बिना सामूहिकता की भावना के आप उदारता के सुन्दर गुण का आनन्द नहीं प्राप्त कर सकते। अमेरिका में सहजयोग को फैलाने के लिए आवश्यक है कि यहां के सहजयोगी अपनी गहनता को बढ़ाये तभी वे, सहजयोग को तेजी से बढ़ा पायेंगे। ऐसा करने में यदि वे असफल होते हैं तो वे उत्तरदायी होंगे। हंगरी का एक सहजयोगी उस देश को स्वतंत्र कराने के लिए पर्याप्त रहा। सहजयोगियों को यह समझना है कि वे आधार हैं अतः उन्हें बहुत गहन, विवेकपूर्ण तथा विशाल हृदय होना है। अब भी वे अपने भूतकाल से तथा अपने आक्रामक संस्कारों से चिपके हुए हैं। दूसरों से प्रेम तथा करुणा आपका स्वभाव होना चाहिए क्योंकि आपकी आत्मा भी प्रेम तथा करुणा ही है। आत्मा प्रेम करती है तथा प्रेम के आदान-दान का आनन्द लेती है।

अपनी आत्मा की अभिव्यक्ति के लिए हमें इसके स्वभाव को समझना है तथा सच्चे आत्मदर्शन। आत्म-विरोधी संस्कारों से छुटकारा पाना है। जब गहनता बढ़ती है तो देवी शक्ति का संचार होता है और बहुत सुखद अनुभव होता है। देवी शक्ति को संचरित होने के लिए एक पूर्णतया स्वच्छ अहम् तथा धन विहीन माध्यम की आवश्यकता होती है।

विश्व के किसी अन्य कोने में अमेरिका जैसी बहुत सी समस्याएँ नहीं हैं। सहजयोग को फैला की चिन्ता को लेकर युद्ध स्तर पर निकल पड़ना ही केवल एकमात्र इल है। सामूहिकता के द्वारा सहजयोग के स्तर को सुधारना आवश्यक है। अमेरिका विशुद्धीचक्र का स्थान है और यह चक्र सामूहिकता की आभिव्यक्ति है।

द्वैत विवेक, एक दूसरा महत्वपूर्ण गुण जिसकी आभिव्यक्ति अमेरिका में होनी चाहिए और जो स्वरूप में सब कुछ देखता है, को स्क्छ करने के लिये हमें सामूहिकता में सूचा ध्यान करना चाहिए। ध्या केवल फोटोग्राफ के सामने बैठना ही नहीं परन्तु ऐसा होना चाहिए जो कार्य कर यह परम चैतन्य को कार्यान्वित करके और हर अछे कार्य को चमत्कारिक रूप से सफल बना सके। यदि ऐसा नहीं होता तो कही कुछ खराबी अवश्य है। अमेरिकन लोग बाधा विहीन, सुख-सुविधा सम्पूर्ण जीवन के आदी हैं इस तरह का जीवन बड़ा उबाऊ होता है। एक चुनौतीपूर्ण स्थिति नीरसता को सरसता में बदल देती है उदाहरण के रूप में एक छोटे कमरे में इतने अधिक लोग रह रहें हो कि उस कमरे को पार करना य वहाँ स्नान करना एक कठिन कार्य हो जाये, बहुत ही रोचक लगता है। बहुत सुख-सुविधा चाहने वाले लोगों में सूक्ष्म, दृष्टि नहीं होती। उनके स्वभाव भी भयानक होते हैं। अपनी नीरसता में अमेरिकन लोग विनाशकारक कार्य कर डालते हैं।

मैंने इतना काम किया और उसने इतना, इस तरह के विचार पाँत-पाँत के बीच तलाक और झगड़े की जड़ है। यदि वे एक दूसरे को, प्रस्न करने के लक्ष्य से कार्य करे तो इसका आनन्द मा ही उनकी सारी धकान और कष्ट को समाप्त कर देगा। किसी भी उपलब्धि को पाने का सर्वोत्तम तरीक उसे श्री माता जी के चरणों में छोड़ देना है, क्योंकि जब हम समर्पण कर देते हैं तो देवी शक्ति का संचा हमारे अन्दर होना शुरू हो जाता है। यह संदेश मुहम्मद साहब का था तथा श्री कृष्ण का भी, जिन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा "सर्व धर्मान् पारत्यज्य माम् एकम् शरणम ब्रजः" और एक बार जब अमेरिका के सहजयोगियों में वह समर्पण विकसित हो जायेगा तो परमात्मा हर चीज का ध्यान रखेंगे। परन्तु इसके लिए हमें म के प्राँत समर्पित होना है।

परन्तु अभी तक भी हम महत्वाकांक्षी हैं और हमारी प्राथमिकताएँ अनुचित हैं। महत्वाकांक्षा अनावश्यक है। यह एक कल्पनिक अवस्था है। परन्तु सहजयोग, एक वास्तविकता है। परमात्मा की इच्छा के अनुसार कार्य होंगे। हर कार्य को निर्विघ्न पूर्ण करने की इच्छा सहजयोग का तरीका नहीं है। जो भी हमें प्राप्त होता है उसमें हमें परमात्मा का हाथ दिखाई देना चाहिए।

अमेरिका में सहजयोग को गाँतशील करने के लिए आँत गहन स्तर के छोड़े से सहजयोगियों की आवश्यक है। यदि अमेरिकन लोग इतनी सुगमता से मूर्ख न बन गये होते तो यह झूठे गुरु तथा नकारात्मकता इस देश में जड़ न पकड़ सकती।

योगेश्वर श्रीकृष्ण द्वारा आर्शिवादित इस देश की भूमि पर हम रह रहे हैं, यदि इस तथ्य को समझते होते तो हम यह तभी समझ सकते कि श्रीकृष्ण ने दुष्टताओं का विनाश किया। वे परम चैतन्य योग करवाने वाली देवी शक्ति थे। वे ईश्वर थे। वे देवता थे जिन्होंने इस क्षेत्र पर शासन किया। तो अब आपको कैसा होना चाहिए? योग में हम सबको भी गुरु होना चाहिए। मानसिक रूप में नहीं परन्तु उच्चावस्था में गुरु होना चाहिए। यदि यह उच्चावस्था प्राप्त हो सके तो आप सर्वोच्च योगी बन जावेंगे। यह शक्ति इस स्थान पर विद्यमान है। बहुत से लोगों ने मुझे कहा है कि मैं अमेरिका की चिन्ता छोड़ो, यहां कुछ नहीं होने वाला"। परन्तु मैं जानती हूँ कि योगेश्वर के इस देश में महान शक्ति विद्यमान है। यदि योगेश्वर की उस शक्ति को आप प्रयोग कर सके तो इस अवस्था में, जबकि इतिहास एक नया रूप ग्रहण कर रहा है आप पूर्ण मानव जाति का बहुत उपकार कर सकते हैं।

हर मनुष्य आध्यात्मिकता की बात कर रहा है परन्तु आध्यात्मिकता केवल आप लोगों के पास है। केवल आप लोगों के पास शक्तियाँ हैं और आप ही उन्हें फैला सकते हैं, एक बार जब आप उन्हें फैलाने लेंगे तो जीवन के हर क्षेत्र में महान ऊँचाईयों जो आप प्राप्त करेंगे, वे बहुत ही आश्चर्यचकित करने वाली होंगी। इस देश के शासक श्री योगेश्वर की शक्तियों का प्रयोग आपने करना है। मेरे आशीर्वाद से अपनी गति तथा गहनता से आप वह ऊँचाई प्राप्त कर सकेंगे। मूर्खतापूर्ण झगड़े तथा बातें छोड़कर कार्य करने का प्रयोग करो। सामूहिक बनो। एक दूसरे को समझने का तथा अपने हृदय खोलने का प्रयत्न करो। आपके अन्दर वह गहनता है। इस देश में आपका जन्म इसलिए हुआ क्योंकि योगेश्वर आपको यहाँ चाहते थे और उन्होंने अपने प्रेम के कैभव से आपको धन्य किया है।

माधुर्य के उस अवतार का माधुर्य तुम्हें अपने में आत्मसात् करके फैलाना है। एक दूसरे का आनन्द लेने का सम्बन्ध, एक दूसरे को समझने का सम्बन्ध शहद की तरह मधुर होना चाहिए। मुझे विश्वास है यह कार्य करेगा, सभी के लिए कार्य करेगा।

श्री माता जी की सोवियत संघ की यात्रा

25 जून से 2 जुलाई, 1990

मास्को लेंनिनग्रेड और क्रीव के विशाल खेल स्टेडियम में श्रीमाता जी के कार्यक्रम हुए। मास्को और लेंनिनग्रेड में 10,000 से भी अधिक जिज्ञासु आए। जब श्रीमाता जी ने सप्ताहकार दिया तो हमारे उल्लास की सीमा न रही, क्योंकि लगभग सभी जिज्ञासुओं ने अपने सप्ताहकार को हाथ उठाकर स्वीकारा। कक्षा हमारे सभी सहजयोगी भाई-बहन उनकी धिरकती आंखों, चमकते चेहरों और उनके सहस्रार पर नाचती हुए लहरियों की झड़ी का चमत्कारिक दृश्य देख सकते। रूसी लोग श्रीमाता जी को क्लिनिता से सुनते और उनके लिए सुन्दर फूल लाते। फोटो वितरण के समय तो सदा इस प्रकार भगदड़ मच जाती कि पुलिस को ही नियमित करना पड़ता। सोवियत संघ में 25,000 चित्र बँटि गये और वो भी अपर्याप्त थे।

मास्को का सार्वजनिक कार्यक्रम

§25-6-90§

श्री माता जी का भाषण

सर्वप्रथम हमें जानना है कि पूर्व सत्य क्या है। हममें मानवीय चेतना है और अपने मानसिक विचार बनाने की स्वतंत्रता भी हमें है। परन्तु मानवीय चेतना से सत्य को जाना नहीं जा सकता। मनुष्य को एक भिन्न व्यक्तित्व बनना होता है। सम्पूर्ण बाह्य ज्ञान में एक सम्यता की रचना की। यह एक बड़े पेड़ की तरह से है। परन्तु आपको इस सम्यता को पुष्ट प्रदान करने वाली जड़ों का ज्ञान प्राप्त करना है। पूर्ण सत्य को जाने बिना आपको बचाया नहीं जा सकता। किसी भी प्रकार का मानसिक प्रक्षेपण या सिद्धांतवाद अन्त में प्रतिक्षेपण करेगा ही। अर्थात् आपको इसी से एक तेज धक्का लगेगा। क्योंकि इन सिद्धांतों को वास्तविकता से प्रमाणित करना ही होगा। वास्तविकता क्या है? वास्तविकता यह है कि आप केवल शरीर, मन, बुद्धि, अहंकार या संस्कार न होकर पांचवें आत्मा है।

दूसरी बात यह है कि हम सभी मानवीय कार्यों को अनुदत्त समझ बैठते हैं। उदाहरण के रूप में बिना यह जानने का प्रयत्न किये कि एक बीज से फूल किस प्रकार बना। हम फूल को स्वीकार करते चले जाते हैं। हमारे शरीर रचना में भी बहुत से ऐसे तथ्य हैं जिन्हें स्पष्ट नहीं किया जा सकता। जैसे मनुष्य शरीर को अपने अन्दर किसी भी बाह्य वस्तु का स्वीकार न करना। परन्तु गर्भाधान के पश्चात् बच्चा गर्भ में रहता है, उसकी पुष्टि तथा देखभाल होती है और ठीक समय पर उसका जन्म होता है। आम का पेड़ एक सीमित अवस्था तक बढ़ता है। सीमाओं को नहीं लांघता। हर पशु की भी सीमा होती है। इस सारे कार्य को करने वाली कौन सी शक्ति है? वह शक्ति जो हमारी पुष्टि देखभाल तथा संतुलन करती है। यह शक्ति पृथ्वी मां में, सूर्य में तथा सर्वत्र विद्यमान है। यह विद्यमान तो अवश्य है परन्तु हमने इससे पहले इसका अनुभव कभी नहीं किया। अपने मस्तिष्क खुले रखो तथा प्रमाणित होने पर इसे स्वीकार करो। हर मानव अत्यन्त शक्तिशाली है तथा बहुत ही गतिशील जीवन की रचना करने के योग्य भी। बिना शक्ति के स्रोत से जुड़े जिस प्रकार एक यंत्र बेकार होता है उसी तरह देवी प्रेम की शक्ति से जुड़े बिना हम भी बेकार हैं, अभी तक अधूरे हैं और हमारी अभिव्यक्ति भी अधूरी है।

हमारा सौन्दर्य, गतिशीलता तथा कर्णा बहुत ही सीमित है। शीघ्र ही हम हतोत्साहित और निराश हो जाते हैं। सोचते हैं कि जीवन वास्तव में दुर्गीत है तथा प्रकाशित होने के बाद मानव जीवन ब्रह्माण्ड में सर्वोच्च जीवन है। आप अवश्य साक्षात्कार को प्राप्त कीजिए, इस देवी शक्ति का अनुभव कीजिए तथा स्वयं जानिये कि यह यंत्र क्रियास क्या है तथा इसकी तकनीक क्या है। जागृत होकर कुण्डली मानसिक तथा भावात्मक पक्षों की देखभाल करने वाले सात चक्रों में से गुजरती है। तब आपके चित्त में स्थित आत्मा आपके चित्त को जगाती है। यह जागृत इतनी शक्तिशाली है कि जब आप अपना चित्त किसी चीज पर डालते हैं तो यह आपके, आपके साथियों के तथा पूरे विश्व के हितार्थ कार्य करती है। इसके कार्य करने का ढंग ऐसा होता है कि यह हर चीज को समझती है, जानती है तथा सफल बनाने के तरीकों का ज्ञान भी इसे है। जैसे सूर्य हर वस्तु को प्रकाशित करता है। उसी प्रकार आत्मा भी हम सबके अन्दर सामूहिक शक्ति है। परन्तु बिम्ब यदि पत्थर की तरह होगा तो यह कुछ भी नहीं दर्शायेगा। साक्षात्कार पाकर जब आप आत्मा को दर्शाने लगते हैं तो आत्मा के गुणों की अभिव्यक्ति आप के माध्यम से होने लगती है।

आत्मा का प्रथम गुण आपका सामूहिक रूप से चेतन हो जाना है। आप की चेतनता क्लृप्त हो जाती है अर्थात् इस नया क्लृप्त प्राप्त होता है जिससे आप अपने तथा दूसरों के चक्रों का अनुभव अपनी अंगुलियों के अग्र भाग पर कर सकते हैं। यदि आप इन चक्रों को ठीक करना भी जानते हो तो आप अपनी तथा दूसरों की सहायता कर सकते हैं। आत्मा शान्ति का स्रोत है। लोगों ने शान्ति-संस्थाएँ बनाई परन्तु वे स्वयं अशांत हैं। आत्मा द्वारा प्रकाशित व्यक्ति से शान्ति की किरणें पृथ पड़ती हैं।

आत्मा शक्ति का स्रोत है। आप इतने शक्तिशाली हो जाते हैं कि कोई भी व्यसन आपको दास नहीं बना सकता। रातों-रात मैंने लोगों को नशे तथा शराब छोड़ते हुए देखा है। आत्मा ही विवेक का स्रोत है दुःसाध्य बच्चे भी जब साक्षात्कार पा लेते हैं तो अत्यन्त ब्राह्मण बन जाते हैं। आत्म संवेदना उनमें आ जाती है और आत्म-सम्मान वे सीख लेते हैं। आत्मा ज्ञान का स्रोत है। किसी भी प्रकार का हमारा ज्ञान ओछा है। आत्म-साक्षात्कार ही पूर्ण तथा वास्तविक ज्ञान है। खुली आंखों से जब तक आप ज्ञान को देख नहीं लेते आप किसी भी चीज में विश्वास कर लेते हैं। यह अंध-विश्वास है जो आपको विनाश की ओर ले जाता है। व्यसन की तरह से अंध-विश्वास व्यक्ति स्वयं का तथा पूरे समुदाय तक का विनाश कर देता है। सत्य-संवेदना के बिना आप अंध विश्वासी हैं। आप सब अत्यन्त ज्ञानी बन सकते हैं। अपने और दूसरे के विषय में हर चीज को आप जान सकते हैं। अपनी सामाजिक समस्याओं को जान सकते हैं और उनका समाधान भी कर सकते हैं। स्वयं का तथा अपने चक्रों को अच्छी तरह से अनुभव कर सकने के कारण आप अपना मूल्यांकन कर सकते हैं। "मैं" "मेरा" है जब आप कहते हैं तो यह "मैं" क्या है? यह आत्मा है। देवी शक्ति का उदय होने पर आप वही बन जाते हैं जो आप हैं क्योंकि कुण्डली शुद्ध इच्छा शक्ति है। अतः हमें केवल कहना मात्र है कि हम आत्मा बनना चाहते हैं। शेष सब इच्छाएँ अपावत्र हैं। आज आप कर चाहते हैं, क्ल घर और सिलसिला चलता रहता है आप सदा अस्मृत रहते हैं। उस देवी शक्ति से एकाकार होना ही शुद्ध इच्छा है। यह तभी संभव है जब, आप आत्मा बन जायें। सहजयोग कार्य करेगा और इसी के द्वारा ही पूरे विश्व का परिवर्तन होगा। उत्थान के समय आपको अत्यन्त सावधान रहना है क्योंकि जितनी ऊँचाई पर आप पहुँचते हैं पतन उतना ही भयानक होता है।

चिकित्सा सम्मेलन - मास्को

§29-06-1990§

श्री माता जी का भाषण

चिकित्सा अध्ययन में आज तक हमने जो भी खोज की वह पहले से विद्यमान है। मानवीय चेतना से जो भी खोज हम कर सकते हैं उसकी सीमाएँ हैं। जैसे कि यह कहा गया है कि मनुष्य शरीर बाहर की किसी वस्तु को अपने अन्दर स्वीकार नहीं करता। परन्तु जब भ्रूण का आरोपण गर्भ में होता है तो शरीर इसको बाहर नहीं फेंकता बल्कि इसकी देखभाल करता है तथा समय पर इसे जन्म देता है। हमारे शरीर के अन्दर अडोलिन और ऐस्टोकोलिन की कार्यविधि के विषय में कुछ नहीं बताया जा सकता क्योंकि कभी तो ये गतिशील हो जाती है और कभी शान्त। चिकित्सा उपलब्धियों के माध्यम से हम, बहुत सारे तथ्यों को स्पष्ट नहीं कर सकते। खोजने तथा जानने के लिए बहुत कुछ बाकी है। मैं चाहूँगी कि आप सब इन वस्तुओं से उच्च ज्ञान प्राप्त करें जिसे अभी तक जाना नहीं जा सका। यह सत्य है या असत्य, इसे जानने के लिए एक वैज्ञानिक की तरह से महिष्क को खुला रखें। इससे पूर्व यह केवल परिकल्पना मात्र है। सहजयोगी आपको संज्ञान की पूरी तस्वीर देता है। जैसे-2 आप सहजयोग में ऊँचे उठते हैं तो स्वयं ही इस महान प्रणाली को समझ जाते हैं और कार्यन्वित कर सकते हैं। सर्वप्रथम हमें यह स्वीकार करना है कि हम केवल मानव शरीर नहीं हैं। न ही मनोभाव है और न हम अहम् और बंधन हैं, हम केवल शुद्ध आत्मा हैं। सर्वत्र विद्यमान प्रेम की शक्ति सारी, जीवन्त क्रिया जैसे फूलों की रचना, फलों तथा मनुष्यों को बनाना, आदि को करती है। विज्ञान में लोग प्रेम को महत्व नहीं देते फिर भी प्रेम के बिना चिकित्सक रोगी के प्रति समर्पित नहीं हो सकते।

सबसे पहले चिकित्सक को आत्मा बनाना है। इस सर्वत्र विद्यमान प्रेम शक्ति के फल को ठण्डों लहरियों के रूप में उसे अपने सहस्रार पर अनुभव करना है। यही यह यंत्र है जिससे आपने पहले स्वयं को फिर, दूसरों को स्वस्थ करना है। चिकित्सा-विज्ञान में हम कह सकते हैं कि सूक्ष्म स्नायु-तंत्र की देखभाल मध्यम मार्ग करता है तथा दो अन्य मार्ग हमारे दाँये तथा बायें स्नायु-तंत्र की देखभाल करते हैं। सहजयोग के अनुसार बाँया तथा दाँया स्नायु तंत्र दो भिन्न ऊर्जाएँ हैं। बाँया स्नायु तंत्र हमें सुख देता है, दाँया परामर्श देता है और मध्यम स्नायु तंत्र हमारा उदार करता है। यह सब आत्म साक्षात्कार के बाद ही घटित होता है। क्योंकि आपका योग स्थापित होना चाहिए।

मानव शरीर में चक्र मेरु-रज्जु तथा महिष्क में स्थित है। इनकी संरचना बाएँ तथा दाँये से होती है तथा दोनों के सामंजस्य से मध्य-स्नायु-तंत्र बनता है। सैकरम का अर्थ है पवित्र, और यूनानी लोगों को इसका ज्ञान था। यही कारण है कि उन्होंने इस शब्द का प्रयोग चिकित्सा शब्दावली में किया। सहजयोग के अनुसार मूलतः हम तीन प्रकार के लोग हैं। हमारा झुकाव या तो बाँई ओर को हो जाता है या दाँई ओर को। बायाँ भाग हमारी इच्छाओं का द्योतक है और अतृप्त इच्छाएँ हमारे सामूहिक अवचेतन में एकत्र हो जाती हैं। बायाँ भाग, इस प्रकार, हमारे मनस की रचना करता है। प्रथम चक्र के भी नीचे से इसका प्रारम्भ होकर, ऊर्ध्व गामी हो, यह दृष्टि तंत्र को पार कर प्रति-अहं का सृजन करता है। मानसिक बंधनों को ही मनावैज्ञानिक शब्दावली में प्रति अहं कहते हैं। नीचे का यह केंद्र नितम्ब चक्र का पोषक है। §पैलविक प्लैक्सास§। यह उत्सर्जन क्रिया को नियन्त्रित करता है तथा प्रजनन

अंगों को निर्देशित करता है। अतः यौन संबंधों के विषय में मानव के विचार अति संयमित होने चाहिए। मनस के विषय में फ्रायड के विचार अति विकृत हैं। यौन-स्वभाव पर अंकुश रखकर अवोपिता के इ चक्र की रक्षा करने के स्थान पर फ्रायड ने लोगों को उल्टी दिशा में चलने की सलाह दी। हर चीज को उसने यौन-क्रिया से जोड़ दिया जैसे मानव यौन-केन्द्र के अतिरिक्त कुछ भी न हो। स्व-रचित विचारधारा द्वारा उसने बताया कि हर पुरुष की अपनी मां के प्रति यौन इच्छा होती है। इस मानसिक प्रक्षेपण पर ही उसके सभी सिद्धांत आधारित थे और लोगों ने उसे यौन-स्वतंत्रता के अर्थ में लिया। किसी ने उसे चुनौती तक नहीं दी। पश्चिम में वह ईसा से भी अधिक लोकप्रिय हो गया। परिणामतः एड्स गोनोरिया तथा सिफलिस {सूजाक} जैसे यौन-अंगों से संबंधित रोग आज फैले हुए हैं। सदा से इन अंगों को गुप्तांग या {निजी अंग} कहा जाता रहा है। पर इसका अर्थ कभी नहीं समझा गया।

शरीर यन्त्र के बाप भाग के विकार मानसिक समस्याओं तथा दाईं ओर के विकार {अति गतिशीलता} की समस्याओं के लिए उत्तरदायी हैं। अत्यधिक कार्य करना तथा भविष्य की बहुत चिंता करना {साइकोसोमैटिक} मनोदोषक समस्याएं उत्पन्न करते हैं। अति विचारशील तथा भविष्य के विषय चिंतित मस्तिष्क दूसरे चक्र की सारी ऊर्जा को ले लेता है। दाये पक्ष की समस्याएं अति कार्यरत जिगर के कारण होती हैं। प्लीहा का पोषण न होने से मधुमेह हो जाता है और यकृत की कमजोरी लुकीमिया को जन्म देती है। गुर्दों की दुर्बलता के कारण उच्च रक्त-चाप हो जाता है तथा जिगर की गर्मी बढ़ने के कारण अस्थमा। स्पंज की तरह से होने के कारण मस्तिष्क जड़ सा हो जाता है तथा गर्मी गुर्दों को पहुँचती है। इससे मूत्र त्याग में अवरोध हो जाता है और मूत्र पूरे शरीर तथा रक्त में संचरित होने लगता है। यह कब्ज का भी कारण बन जाती है। उष्णता रोग का तथा शीतलता आरोग्य का संकेत है। डिलियम गैस के गर्म करने पर पाया गया कि उसके परमाणु परस्पर संघर्ष-रत हो गये और शीतल हो जाने पर सभी परमाणुओं में सामन्जस्य स्थापित हो गया।

तीसरे प्रकार के रोग {साइकोसोमैटिक} मनोदोषक हैं। मनोदोषक {साइकोसोमैटिक} लोग शारीरिक रोगों की अपेक्षा मानसिक रोगों से अधिक पीड़ित होते हैं। कैंसर मनोदोषक {साइकोसोमैटिक} रोग है। सभी प्रकार के वायरस या तो अति सूक्ष्म-दर्शी मृत पोषे है और या मृत जन्तु हैं जो कि विकास की प्रक्रिया से बाहर चले गये हैं। वे सामुहिक-अवचेतना नामक क्षेत्र में रहते हैं। चिकित्सक केवल उस सीमा तक पहुँचे हैं कि प्रोटीन 53 और प्रोटीन-58 कैंसर की गति को बढ़ाते हैं। आकस्मिक सदमें की अवस्था कैंसर का कारण बन जाती है। इस अवस्था में मानव रचना में समय से ही शरीर में बने बाईं ओर के क्षेत्र विशेष पर आक्रमण होता है। यह सामुहिक - अवचेतन का ही क्षेत्र है जिसमें सब मृत परमाणु रहते हैं। अतः बहुत से मृत-प्राणी इस क्षेत्र के चहुँ ओर चिपके हुए हैं।

शरीर विज्ञान में शायद आपने न सुना हो कि सभी तत्वों के मूल में आत्मा कारणरूप से विद्यमान है। यह शरीर के पिछले भाग से मुद्रिकाओं के रूप में जुड़ी हुई है। सातों चक्रों तथा पाँचों अस्थि में इसका निवास है। यह सात घेरे बनाती है। सक्षात्कार के पश्चात चक्रों की भाँति परस्पर प्रविष्ट होते हुए आप इन्हें देख सकते हैं। लघु-विराम् चिन्ह के समान प्रकाश करना, जो कि लहरियों का चैतन्य है, भी आप देख सकते हैं। यह मृतात्मारूप है। ग्राही क्षेत्र में अब यह आत्मा हम में प्रतिबिम्बित होती है। हाल ही में अमरीका में कुछ लोगों ने कोशिका के ग्राही क्षेत्र के चित्र भी लिए हैं जो कि ठीक

वैसे ही दिखाई देते हैं जैसा कि हम आत्म-साक्षात्कार के बाद महसूस करते हैं। मानव पर किसी अ आत्मा का प्रभाव भी इन कोशिकाओं द्वारा प्रतिबिम्बित होता है। इसका प्रभाव ग्राही {रिसेप्टर} पर पड़ता है। यह बाह्य आत्मा हमारे किसी एक या सभी चक्षों से जुड़ सकती है। यह कोशिकाओं को प्रभावित करती है जिसके दुष्प्रभाव के परिणाम स्वरूप, मिर्गी, मानसिक रोग, कैंसर आदि हो जाते हैं। यदि वायरस रोगाणु हों तो इनकी बुराई न होती। इनमें से कोई एक अन्दर जाकर प्रभावित करता परन्तु यह तो एक से दूसरे तक पहुँच सकता है। और मानवीय पकड़ की अवस्था में तो यह अत्यंत दुःसा है।

मानसिक तनाव, हृदय तथा मिर्गी बाएँ भाग के विकार से होते हैं। माइग्रेन या सिरदर्द र शरीर के दाएँ या बाएँ किसी भी भाग से हो सकता है। सभी अस्थि रोग साइकोसोमैटिक है। लुकीमिया ट्यूमर, फाइब्रोसिस साइकोसोमैटिक हैं। मैनोपाज कोई रोग न होकर एक सामान्य स्थिति है। प्लीहा सृजन साइकोसोमैटिक भी हो सकती है। शिआटिका सोमैटिक या साइकोसोमैटिक हो सकती है। सभी मानसिक रोग बाएँ भाग के विकारों की देन हैं। स्क्रिजोप्रेनर्या भी बाई विकृति के कारण होता है। शराब का व्यसन दाँयी ओर से शुरू हो कर बाई ओर की समस्याएँ बना देता है। ऑरिधराइटिस भी साइकोसोमैटिक है व्यसन, धूम्रपान, समालंगता और विकृत यौन, यौन-आसक्ति सभी बाई ओर की विकृतियों के कारण साइकोसोमैटिक भी हो सकते हैं।

धूम्रपान दाएँ भाग की समस्याओं का सृजन करता है। क्योंकि मानव दोष भावना-ग्रस्त होता है। विकृत यौनाचार, नेत्र-वासना, एड्ज, यौनासक्ति तथा दुराग्रह सभी शरीर के वाम भाग के विकारों के कारण हैं। मल्टीपल कलिरोसिज मध्य-स्नायुतंत्र विकार के कारण होता है। मनोरोग शरीर के दोनों भागों के विकारों से सम्बद्ध हैं। पार्किंसन रोग बाएँ भाग के विकार के कारण, रयूमेटिस्म नाभि तथा मंसपेशियों की अस्वस्थता शरीर के बाएँ भाग की विकृति के कारण होता है। अति कर्मी, भावप्यवादी एवं चेतन मस्तिष्क प्रयोगकर्ता यूपीज रोग ग्रस्त होता है। अत्यधिक अध्ययनशीलता के कारण मानव का चेतन मस्तिष्क पूर्णरूपेण जड़ हो जाता है। ठीक है कि आप चल रहें हैं किन्तु चलने के प्रति आपका अचानक सचेत होना आपन गिरने का कारण बन जाता है। मैंने अमरीका में आठ वर्ष पूर्व कह दिया था कि "ऐसा होगा," मैंने एड्ज के विषय में चौदह वर्ष पूर्व कहा था परन्तु किसी ने ध्यान नहीं दिया। और यह समस्या गम्भीर रूप धारण कर चुकी है। मधुमेह रोग अधिकतर शरीर के दाएँ भाग के विकारों के कारण होता है।

मधुमेह प्रायः दायी विकृतियों से होता है। दायी ओर के अत्यधिक प्रयोग से थकान हो सकती है। इस अवस्था में, क्योंकि विराट से संबंध विच्छिन्न हो जाता है, मनुष्य के रोग ग्रस्त होने की पूरी सम्भावना होती है। प्रोटीन 53 तथा 58 बहुत ही अहम संचालित तथा निरंकुश है जिसकी कोशिका को यह छू लेते हैं वह अनिष्टकर बन जाती है। इस प्रकार विषाक्तता प्रारम्भ हो जाती है। अतः औरतों को स्तन कैंसर हो जाता है। मध्य हृदय मां का चक्र है। जब किसी स्त्री के मातृत्व को चुनौती मिल जाती है जैसे पति यदि बदचलन हो और पत्नी को सुरक्षित न रखें या पत्नी स्वयं असुरक्षित हो तब यह चक्र प्रभावित हो जाता है। यह चक्र 12 साल की आयु तक हृदय अस्थि में रोगों का मुकाबला करने के लिए जीवाणु उत्पन्न करता है। तब यह जीवाणु पूरे शरीर को भेज दिये जाते हैं भय की अवस्था में हृदय अस्थि

ठहल जाती है। और दूर नियंत्रक की तरह से सभी जीवाणुओं को युद्ध करने का संदेश भेज देती है। यदि इस प्रकार से प्रभावित स्त्री में सुरक्षा भावना कुण्डलिनी की जागृति से स्थापित कर दें तो कैसा ठीक किया जा सकता है? रोग की बड़ी हुई अवस्था में यदि रोगी में इच्छा शक्ति का झरस हो गया हो तो स्तन को कटवाकर रोगी के अन्दर सुरक्षा की भावना उत्पन्न की जानी चाहिए।

कुछ रोग निम्बेष्ट अंगों के कारण भी हो जाते हैं। निष्कृतता की अवस्था में मनुष्य को हृदयशूल हो जाता है। विशुद्धी की पकड़ की अवस्था में जब आप स्वयं को दोषी मान बैठते हैं तो रक्त में अवरोध होने के कारण यह सिर तक नहीं पहुंच पाता और इसे वापस हृदय को जाना पड़ता है। और यह क्रिया हृदय को क्लान्त तथा निम्बेष्ट बना देता है। सहजयोग में हम दो प्रकार के अंग मानते हैं। पहला निम्बेष्ट तथा दूसरा अति सक्रिय।

चिकित्सकों को पहले स्वयं को अच्छी तरह से स्थापित करके अपना संरक्षण करना चाहिए और तब उन्हें दूसरों का उपचार करना सीखना चाहिए। जिन चित्रों में लहरियों है उनका प्रयोग कीजिए। मनोदीर्घक रोगों का पहले बांये भाग से उपचार करना चाहिए। कुछ बच्चे अति क्रियाशीलता के शिकार होते हैं। मधुमेह का भी यही कारण है। गर्भावस्था में मां को बहुत कठिन कार्य नहीं करना चाहिए। उसे अधिक आराम करना चाहिए। बहुत अधिक सोचे बिना उसे कुछ शांतिदायक तथा अच्छी पुस्तक पढ़नी चाहिए। ध्यान लगाना सबसे अच्छा है। गर्भावस्था में यदि मां अतिक्रियाशील हो या भविष्य के विषय में बहुत चिन्तित हो तो रोगी संतान उत्पन्न होती है। यदि मां इस अवस्था में बहुत उत्तेजित रहती हो तो बच्चे को लुकिमिया रोग हो सकता है। प्लीहा हर आपात स्थिति के लिए होता है क्योंकि यह रक्तानु उत्पन्न करता है। परन्तु यदि आप हर समय उत्तेजित तथा भयभीत रहते हैं तो बेचारे प्लीहा की समझ में कुछ नहीं आता। यह अनियमित, सनकी हो जाता है। यह अवस्था बच्चों या व्यसकों किसी की भी हो सकती है।

शरीर के बांये भाग से जब कोई समस्या शुरू होती है। और ऐसे में यदि उदासी, दुर्घटना या किसी अन्य प्रकार का सदमा पहुंच जाये तो यह लुकिमिया की शुरुआत कर देता है। सबसे कठिन बात हम लोगों के समझने के लिए यह है कि नकारात्मक शक्तियाँ कार्यरत हैं। और नकारात्मकता के माध्यम से ही यह कार्य करती है जैसे किसी कुगरु या परामनोविज्ञान, सम्मोहन विद्या आदि के माध्यम से। आपकी आत्मा के ऊपर किसी मृत आत्मा को डाल देने से भी ऐसे कार्य होते हैं। मनुष्य को बहुत ही स्वच्छ होना चाहिए। जागृतिकरण के लिए आप धन नहीं ले सकते। यह एक जीवन्त क्रिया है। उदाहरण के रूप में पृथ्वी में जब हम कोई बीज डालते हैं तो इसके अंकुरण के लिए वह हमसे कोई धन नहीं मांगती। बीज तथा पृथ्वी मां के स्वभाव के कारण ही अंकुरण होता है। सारी जीवन्त क्रियाओं को हम अधिकार के रूप में मानते हैं। इसमें कोई अहसान नहीं है। परन्तु कुछ दुष्ट लोग धन से ही संचालित हैं। उनमें न तो हृदय की पवित्रता है न ही अंकों की स्वच्छता। वे स्त्रियों में पुरुषों में और हर प्रकार की गंदी वस्तुओं में दिलचस्पी रखते हैं। जागृति की वह व्याख्या भी नहीं कर सकते और न ही वे जागृति का सम्बन्ध चिकित्सा या अन्य विज्ञान से बता सकते हैं।

आवश्यकता पड़ने पर सहजयोग में हम कुछ हठयोग, व्यायाम करते हैं। किसी शारीरिक समस्या के कारण जब कोई चक्र क्षतिग्रस्त होता है तो हम हठयोग को उपयुक्त व्यायाम बताते हैं। परन्तु जिस प्रकार से लोग हठयोग करते हैं वह सभी औषधियों को एक ही बार में सेवन कर लेने जैसा है। "हठ"

में हठ दोनों नाडियों प्रयोग होनी चाहिए। परन्तु आजकल केवल "ह" का ही प्रयोग होता है। इससे आप के अन्दर भयंकर असंतुलन हो सकता है। हठयोग को करने वाले लोग अत्यन्त ही शुष्क तथा उग्र स्वभाव के हो सकते हैं। वे अपनी पत्नी और बच्चों को त्याग सकते हैं।

हमें हर समय मध्य में होना चाहिए और हमारी कुण्डलिनी स्थाई रूप से सर्वत्र व्यापक शक्ति में स्थित होकर हमारे अन्दर संचरित रहनी चाहिए। मानसिक, भावात्मक तथा शारीरिक जीवन के अतिरिक्त आपका आध्यात्मिक जीवन भी है। यह जीवन अत्यन्त ही चमत्कारी तथा आनन्दमय है, जब आप इस देवी प्रेम शक्ति को समझ जाते हैं और यह जान जाते हैं कि किस प्रकार यह सब कुछ कार्यान्वित करते हैं तो आप आश्चर्यचकित रह जाते हैं।

++++

सहजयोग कार्यक्रम संचालित करने के लिए श्रीमाता जी के परामर्श

सहजयोग का परिचय देने के लिए किसी भी जनमंच से जब कोई सहजयोगी बोलता है तो वह सामूहिकता का प्रतिनिधित्व करता है। क्वता जो छाप छोड़ता है। उससे नौसंख्यी श्रोतागण अपनी राय बनाने का प्रयत्न करता है। श्रोता न केवल क्वता को सुनते हैं परन्तु उनका ध्यान उसके वेशभूषा पर भी होता है। वे ये देखते हैं कि क्वता का भाषण उसके दृढ़ विश्वास को दर्शाता है।

अलंकारित या आडम्बरपूर्ण भाषण श्रोताओं की आत्मा को जागृत नहीं कर सकते। व्यक्ति को से बोलना चाहिए और अनुभवगम्य बात करनी चाहिए। आत्मोत्थान की वास्तविक चिन्ता मनुष्य में है। यह चिन्ता मनुष्य के चेहरे से प्रकट होनी चाहिए इसके लिए भिन्न दिशाओं में हाथ नहीं चाहिए।

लम्बे भाषण नहीं देने चाहिए। अपनी भाषण कला में ही प्रायः व्यक्ति खो जाता है। लक्ष्य को। वृद्धि-प्रदर्शन अहं की वृद्धि करता है। बिना अत्यधिक गम्भीर हुए क्वता की मुखकृत सौम्य होनी चाहिए उसकी वाणी से आनन्द रस टपकना चाहिए। गौरव, शालीनता तथा स्तुलन पूर्वक उसे स्वयं त करना चाहिए तथा उसकी वेशभूषा औपचारिक और बाल उंचत प्रकार से बने होने चाहिए।

सामूहिक सभाओं में केन्द्र चालकों को लम्बे भाषण नहीं देने चाहिए। भाषणों को कम करके उन्हें जी के टेप सुनवाने चाहिए। केन्द्र चालक, श्री माता जी तथा सहज-योगी के बीच माध्यम नहीं यह नहीं भूलना चाहिए कि श्री माता जी के ऑडियो तथा वीडियो टेपों में उनकी लहरियां हैं जो अशुद्धियों को दूर कर सहजयोगियों को आत्मानन्द के अनुभव प्रदान करती है। खेद की बात है तक बहुत से केन्द्रों ने न तो श्री माता जी के टेप मंगवाए हैं और न ही वे इन्हें सुनवा/दिखावा

ऑडियो तथा वीडियो सूचना पिछले अंक में दे दी गई थी।

ऑडियो/वीडियो टेपों की प्रतियाँ बनाने या कोई साहित्य अथवा पुस्तिका छापने के लिए श्री माता जी व्यक्तियों/केन्द्रों को सन्त मना किया है।

शिशु पालन हेतु श्री माता जी का परामर्श

मिआमी में श्री माता जी ने भारत तथा अमेरिका देशों में शिशु-पालन के विषय में बताया जिनके बच्चे विद्यालयों तथा दिवस-देख-रेख केन्द्रों में हैं उन अन-सहजयोगियों की समस्याओं के विषय में जब श्री माता जी से पूछा गया तो श्री माता जी ने एक - दम उत्तर दिया कि सहजयोगी और अन सहजयोगी सभी बच्चों को भारत जाना चाहिए। तब उन्होंने भारतीय सहज-योग स्कूल के विषय में बताया कि वहाँ जाकर बच्चों में सुरक्षा तथा आत्म सम्मान की भावना स्थापित होगी। औपचारिक तथा अनौपचारिक दोनों प्रकार की गाँताँबंधियाँ वहाँ होंगी। भिन्न-भिन्न अध्यापक भिन्न गाँताँबंधियों में मार्गदर्शन करेंगे। संरक्षक के व्यक्तिगत गुणों के माध्यम से सुरक्षा की भावना स्थापित होती है। केवल एक मात्र स्थायी संरक्षक ब होना आवश्यक नहीं।

श्री माता जी ने बताया कि शिशुपालन कला भारतीय सभ्यता का एक अंग है। भारत में सामान्य ज्ञान कहलाने वाली बहुत सी बातें भी पश्चिम के लोग नहीं जानते। उदाहरण के रूप में तेल में तली वस्तुओं को बर्फ सी ठंडी कोला कोला के साथ खाना, और ठंडे पानी में तैरना, अत्यंत गर्मी से ताँपत अवस्था में भी ठंडे पेय लेना। यह पश्चिमी लोगों की बीमार करने वाली गाँताँबंधियों के छोटे-छोटे उदाहरण हैं।

कार्य को क्यों और कैसे किया जाता है इसके विषय में भारतीय माताएँ बच्चों से लगातार बातचीत करती रहती हैं। बच्चों से बातचीत करने के महत्व पर श्री माता जी ने बहुत जोर दिया। उन्होंने कहा कि बच्चों की बात को सुना जाना चाहिये क्योंकि वे भी अत्यन्त समझदार हो सकते हैं। उनसे उन्हीं बँ आयु स्तर पर आकर बातचीत की जानी चाहिए ताँकि वह समझ सके। अमेरिका में बच्चों को खिलौने देकर हम चाहते हैं कि बच्चे शांत हो जाये। "नहीं" कहने वाले बच्चे को किस तरह सम्भाला जाये - जैसे नई में खाना नहीं खाना चाहता। इस प्रश्न के उत्तर में श्री माता जी ने परामर्श दिया कि अगले खाने तब बच्चों को खाने के लिए न कहा जाये। उन्हें समझ आ जायेगी कि याँद वह समय पर खाना नहीं खायें तो भूख लगेगी।

श्रीमाता जी ने कहा कि बच्चों को समझाने के स्थान पर अमेरिका में माता-पिता उन्हें चुप करा देते हैं। इससे बच्चों के आत्म-सम्मान के विकास में बाधा उत्पन्न होती है।

बच्चे जब कुछ गलती कर रहे हों तो उसकी तरफ से आँख बंद कर लेनी चाहिए। याँद वे किसी वस्तु को तोड़ दे तो उन्हें डाँटना नहीं चाहिए परन्तु याँद वे कोई अच्छा कार्य करे तो उसके लिए उनकी सराहना अवश्य करनी चाहिए। बच्चों से बातचीत तथा वस्तुओं की व्याख्या उनका मार्गदर्शन करती है।

दिवस देख-रेख केन्द्रों में बच्चों की बीमारी के बाहुल्य के विषय में जब श्री माता जी से पूछा गया तो उन्होंने कहा "हाँ, अमेरिका के लोग काफी बीमार हैं"। उन्होंने कहा कि मन के मध्य हृदय की समस्या

के कारण ऐसा होता है। उन्होंने कहा मैं तुम्हारे हृदय की ठीक बीच में बैठी हूँ। एक शक्तिशाली मध्य हृदय की स्थापना माताओं के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण है।

भारत में ईश्वरीय चेतना के विषय में श्री माता जी ने व्याख्या पूर्वक बताया। कई कहानियों के माध्यम से उन्होंने समझाया कि किस प्रकार भारतीय ईश्वर की शक्ति को पहचान लेते हैं, स्वीकार करते हैं तथा उसका भय मानते हैं। अमेरिका में ईसाई मत पर भयंकर अंधविश्वास है। चर्च नेता ईश्वर के नाम पर लोगों से धन पेंठ लेते हैं। ईसाई मत की असत्यता को लोगों का न पहचान पाना श्री माता जी के लिए खेदपूर्ण है।

विवाह संबंधों में तथा माता-पिता के रूप में स्त्री-पुरुष के संबंधों के बारे में श्रीमाता जी ने व्याख्यापूर्वक समझाया। भारत में माता-पिता के कर्तव्य सुस्पष्ट और निर्धारित है।

पति पूर्णतः पत्नी पर निर्भर करता है। श्री माता जी ने कहा कि बिना उनके परामर्श के उनके पति कोई निर्णय नहीं लेते। वे श्री माता जी पर निर्भर करते हैं। उन्होंने कहा कि भारतीय पतियों को घरेलू कार्य का ज्ञान नहीं होता है और इन कार्यों में निर्णय लेना वह नहीं जानते।

एक भारतीय सहजयोगी ने स्पष्ट किया कि भारत में उसके विवाह के समय उसे परामर्श दिया गया था - तुम राजनीति तथा अर्थनीति आदि के महत्वपूर्ण निर्णय लो और तुम्हारी पत्नी, घर ग्रहस्थी को चलाने तथा बच्चों को पालने आदि साधारण कार्यों के विषय में निर्णय लेगी। भारत में मातृत्व की शक्ति को मान्यता प्राप्त है।

श्री माता जी ने कहा कि माता-पिता को बच्चों के सामने कभी नहीं झगड़ना चाहिए। झगड़ालू माता-पिता के लिए बच्चों के हृदय में सम्मान विकसित नहीं होता। माता-पिता को एक दूसरे का सम्मान करते देखकर बच्चों के दिल में भी उनके प्रति सम्मान विकसित होता है। श्री माता जी ने कहा कि अमेरिका में माता-पिता को शिक्षित करने के लिए हमें एक विद्यालय की आवश्यकता है। रूस की आगामी यात्रा में श्रीमाता जी इस विषय पर विस्तारपूर्वक बतायेंगी। शिशुपालन का ज्ञान अमेरिका में लाने के लिए श्री माता जी ने कुछ परामर्श दिये जिनका अनुसरण किया जा रहा है।